REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

# भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी उपन्यास : गोविंद मिश्र के उपन्यास पॉच ऑगनोंवाला घर के विशेष संदर्भ में

श्री. दरेप्पा मल्लिनाथ बताले
सोलापूर विश्वविद्यालय, सोलापूर.

**प्रस्तावना :**

आज जमाना हाईटेक का है, कंप्यूटर का है, भूमंडलीकरण का है। भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में नई – नई प्रेरणाएँ, परिकल्पनाएँ, और विचारधाराएँ देश, समाज तथा मनुष्य को आंदोलित कर रही हैं। विश्व–पटल पर फूटे उच्च प्रौद्योगिकी के स्त्रोत ने 'ग्लोबल विलेज' (विश्वग्राम) की परिकल्पना को साकार कर दिया है। आज जहॉ भूमंडलीकरण को नए – नए स्वरुपों में गढ़कर व्याख्यायित किया जा रहा है। भूमंडलीकरण को किसी सर्वसामान्य में नहीं बॉधा जा सकता। इसकी एक सुसंस्कृत सरल परिभाषा दी गई है कि तकनीकी और संचार–क्रांति ने को समेटकर एक 'विश्वग्राम' यांनी 'ग्लोबल विलेज' में बदल दिया है।

विश्वग्राम की यह परिकल्पना मार्शल मैक्लूहान की थी, लेकिन हमारे यहॉ इस अवधारणा के मूल स्वर पहले से ही विद्यमान हैं। हमारे चिंतक 'ऋग्वेद' में इस अवधारणा के सूत्र खोजते हुए 'विश्व पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्' का उद्घोश करते हैं। एक 'विश्वग्राम' का स्वप्न हमारे राष्ट्पिता महात्मा गांधी ने देखा था। 'ग्राम स्वराज्य' की बात करते हुए उन्होंने कहा था, ''मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से दीवारों से घिरा रहें, न मैं अपनी खिड़कियों को ही कसकर बंद रखना चाहता हूँ। मैं तो सभी देशों की संस्कृति का संचार अपने घर में बेरोकटोक चाहता हूँ, पर ऐसी संस्कृति के किसी झकोरे से मेरे पॉव उखड़ जाएँ, यह मुझे मंजूर नहीं।'' इस तरह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावनावाले भारत की दृष्टि में विश्व हमेशा से ही एक 'परिवार' रहा है, जिसके अंतर्गत समन्वय और सहयोग की बात है। इसमें समग्र जगत् को एक ही परम तत्व की अभिव्यक्ति मानते हुए बिखरे हुए मानव समाज को एक ही परिवार का हिस्सा माना गया है। भूमंडलीकरण के चक्रवात ने काली ऑधी की तरह संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। पश्चिमी विद्वानों ने भी इसे अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है। 'द लैक्सस एंड द ओलाइव ट्री' में टॉमस फ्रीडमैन ने इस बारे में अपनी अवधारण प्रस्तुत करते हुए कहा है– ''भूमंडलीकरण विश्व में वित (मौद्रिक) बाजार, राष्ट्रों और विकसित तकनीक का ऐसा मिला–जुला रुप है, जिसने विश्व के देशों को तूफानी गति से एक–दूसरे के अत्यंत करीब लाकर खड़ा कर दिया है।

भूमंडलीकरण के दौर में समाज का प्रत्येक घटक जीवनमूल्यों की तिलांजलि देकर भ्रष्ट आचरण से धनोपार्जन में लगा है पारिवारिक समरसता, प्रेम और सद्भाव भी लगभग समाप्त हो गए हैं। ऐसे समय साहित्य और साहित्यकार की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। साहित्य इन स्थितियों में परिवर्तन करने का सामर्थ्य रखता है ऐसा हम सभी महसूस करते हैं। बशर्ते भूमंडलीकरण के बाजारवाद को लेखक अपने आप पर हावी न होने दे।

श्री गोविंद मिश्र बहुआयामी प्रतिभा के लब्ध–प्रतिष्ठ रचनाकार हैं। यात्राकृसंस्मरण, निबंध, समीक्षा, कविता, बाल साहित्य जैसी अनेक विधाओं में आपने स्तरीय लेखन किया है किंतु कथा–साहित्य उनकी अपनी विधा है। अपनी कहानियों और अपने उपन्यासों से उन्होंने न केवल हिंदी साहित्य समृध्द किया है अपितु अपने प्रतिभ सामर्थ्य, गहन संवेदनशीलता, व्यापक अनुभव विश्व और सचेतन रचनाशीलता से नूतन संभावनाओं से संपन्न अनेक आलक्षित क्षितिजों का सांधन भी किया है। कथ्य और शिल्प की नवता और मौलिकता उपन्यास विधा में किए गए अभिनव प्रयोगों के आधार पर उन्हें उपन्यास विधा की नई परंपरा का उद्भावक भी कहा जा सकता है।

'पॉच ऑगनों वाला घर' गोविंद मिश्र की उपन्यास कला के चरम परिपाक को प्रस्तुत करने वाली कृति है। इसकी कथा सन् 1940 के आस–पास से आरंभ होकर 1990 तक के कालखंड तक फैली है। यह पचास वर्षों का कालखंड तीन पीढ़ियों के उत्थान–पतन और स्वतंत्रता संग्राम की मूल्यधर्मी अनाहत राष्ट्र निष्ठा से लेकर स्वतंत्र भारत की भ्रष्ट व्यवस्था में आत्यंतिक मोहभंग और मूल्यहीनता का काल है। इस काल–खंड में घटित सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और नैतिक परिवर्तन भी असाधारण रहे हैं। 'पॉच ऑगनों वाला घर' इन पचास वर्षों का ऐसा प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत करता है जिसमें घटित घटनाओं पारिवेशिक परिवर्तनों के साथ ही उस समय की मानवीय सोच, कारणीय भूत स्थितियों, दारुण परिणामों और भावी संकेतों को भी गहरी संवेदनात्मक संसक्ति के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कालखंड में होनेवाले नैतिक और सांस्कृतिक ह्रास, उनके कारणों और परिणामों को अद्‌भुत कलात्मक संयम के साथ प्रस्तुत किया गया है। संपूर्ण उपन्यास तीन भागों में विभाजित है। प्रथम भाग 'क्षेत्र' के अंतर्गत 1940 से 1950 तक के कालखंड की विशेषताओं का समावेष किया गया है। उपन्यास का आरंभ बनारस की एक ऐसी मनोरम प्रभात से होता है जिसमें निहित संगीत का स्वर, पक्षियों का कलरव, एक बड़े संयुक्त परिवार का परिवेश, कार्तिक स्नान की परित्र सांस्कृकि निष्ठा, गंगा स्तुति, तटों पर स्वर्णाभा बिखेरती गंगा की धवल धारा, है यह वह समय था जब संयुक्त परिवार प्रतिष्ठा का विषय था।

स्वतंत्रता संग्राम के समय जी का जनजीवन पर व्यापक प्रभाव, परिवार की छोटी सीमा से निकलकर राष्ट्र के बड़े परिवार की सुरक्षा के लिए सब कुछ अर्पित कर देने की भावना, अॅग्रेजों की दमन नीति, भारतीय नेताओं का संकल्प, छात्र संगठनों का गठन, स्वतंत्रता–प्राप्ति के उत्सवों में गॉधीजी की अनुपस्थिति, गॉधीजी की हत्या, भारतीय नेताओं की अधिकार लिप्सा जैसे ऐतिहासिक संदर्भो को रेखांकित करते हुए मिश्र जी ने उनकी दारुण परिणतियों को बड़ी कलात्मक समृध्दि के साथ उभारा है। इसके साथ ही पुरानी पीढ़ी ने नई पीढ़ी को स्वतंत्रता का जो उपहार दिया उसके परिवर्तित स्वरुप का भी मार्मिक चित्रण किया गया है।

दूसरे खंड का शीर्षक है 'दीवारे' इसमें 1960 से 1975 तक के घटनाक्रम और पारिवेशिक परिवर्तन का समावेश है। 1950 से 1960 तक का कालखंड राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रिय स्तर पर अनेक प्रकार की ऐसी घटनाएॅ घटीं जिनका व्यापक प्रभाव पड़ा। सन् 1960 के पश्चात् हमारे देश में जनतांत्रिक व्यवस्था के प्रति मोहभंग की स्थिति आई। निष्ठावान समाजसेवी कार्यकर्ता बिलाने लगे और नेताओं की भीड़ दिल्ली की ओर बढ़ गई। सामूहिक संस्कृति वाले संयुक्त परिवार उपभोक्तावादी पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से आत्मकेंद्रित व्यक्तिनिष्ठा में संकुचित होने लगे। मध्यवर्ग की अतृप्त जीवेष्णा, आरंभिक जीवन की महत्वाकांक्षाओं और उनसे निर्मित मनोग्रंथियॉ, आनुवंशिक संस्कारों के प्रभावों, आत्मकेन्द्रिता के कारण निरंतर बढ़ती संवेदनशून्यता, विचारों की टकराहट से उत्पन्न अंतर्द्वंद्व, मूल्यनिष्ठा और मूल्यहीनता के संघर्ष और अंततः भोगवाद की ओर झुकते जाने और मूल्यों से विरत होते जाने की मध्यवर्गीय प्रवृत्ति का प्रभावपूर्ण चित्रण मिश्र जी ने इसी जोड़ी के माध्यम से किया है।

तीसरा खंड 'अंधी गली' 1980 से 1990 तक की स्थितियों से संबध्द है। यह तीसरी पीढ़ी के विश्वृंखलित होने का काल है। यहॉ तक आते–आते पश्चिम की भोगवादी संस्कृति पूरी तरह प्रभावी हो गई। भूमंडलीकरण के कारण पॉच ऑगनों वाले घर की सामूहिक व्यवस्था, आत्मीय संबंध इस पीढ़ी के लिए अकल्पनीय हैं। इस पीढ़ी का सामान्य ज्ञान जितना भी हो पर कल्पना शक्ति शून्य है। घर परिवार, पास–पड़ोस, सगे–संबंधियों की कौन कहे यह पीढ़ी अपने माता–पिता को भी केवल इसलिए स्वीकार करती है कि 'पापा खर्च चलाते हैं और मम्मी घर चलाती है।' मध्यवर्गीय समाज में अॅग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से जिस अप–संस्कृति का प्रसार हुआ उसमें संपत्ति के प्रति मोह, विदेश जाने की तड़प, सिगरेट पीना, बियर पीना, रेस्तरॉबाजी करना, रॉक सुनना, आधुनिकता, परिपक्वता और स्वावलंबी... माने पूरा आदमी हो' जाने की निशानियॉ मानी जाती हैं।' शील, संकोच, मर्यादा, कृतज्ञता, त्याग, सेवा जैसे गुण इस पीढ़ी के लिए अपरिचित और कालबाह्य हैं। अपनी इच्छा के विपरीत होने पर माता–पिता के साथ भी शत्रुवत व्यवहार करना वे अपना सहज अधिकार मानते हैं। उनकी दृष्टि में पुराने सारे मूल्य, आदर्श और आचरण संबंधी सिध्दांत अतीत की वस्तुएॅ हैं। उनके अपने समय में उनका कोई मूल्य नहीं हैं। गोविंद मिश्र ने इस तीसरी पीढ़ी की धुरीहीनता ओर विकृति को राजन के बच्चों के माध्यम से दिखाया हैं।

मिश्र जी इस पीढ़ी की केवल विकृति ही चित्रित नहीं करते। वे इसके मनोवैज्ञानिक कारणों की खोज भी करते हैं। भूमंडलीकरण के विभिन्न संदर्भों में उन्होंने इस विकृति के कारणों का संकेत किया है जिनमें गलत परवरिश, ॲंग्रेजी शिक्षा, विदेशी संस्कृति का प्रभाव, पारंपरिक आदर्शों से अपरिचय, आत्मकेंद्रितता, मानवीय रिश्तों का बिखराव, मूल्यहीनता, कल्पनाशून्यता आदि प्रमुख हैं। भोग प्रधान हो उठा है और आज का व्यक्ति अपने संबंधों का व्यक्तिगत तरक्की के लिए सीढ़ी की तरह उपयोग करना चाहता है। अपने को यह पीढ़ी पूरी तरह स्वतंत्र रखना चाहती है क्योंकि पुराने किसी भी आदर्श या सिध्दांत में उसका विश्वास नहीं है। राजनीति के क्षेत्र में भी यह कालखंड, स्वार्थ, संकीर्णता, बिखराव और अनैतिकता का केंद्र बना रहा। मिश्र जी ने इस कालखंड की पतनशील और अराजक राजनीति और उसके सामाजिक दुष्परिणामं को बड़े प्रभावी ढंग से चित्रित किया है।

गोविंद मिश्र जी मनुष्य की रचनात्मक संभावनाओं के सफल अन्वेषी हैं। 'पॉच ऑगनों वाला घर' के पात्रों में उनकी इस मानवीय निष्ठा को भली प्रकार देखा जा सकता है। जोगेश्वरी अपनी कर्म निष्ठा, प्रबंध कौशल, दायित्व चेतना, ममत्व, सहारा, धैर्य, सांस्कृतिक निष्ठा की दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति हैं बाहर से कुछ विलासी दिखते हैं किंतु समय आने पर वे सब कुछ छोड़कर साहसपूर्वक स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ते हैं और इसी में अपने जीवन की चरम सार्थकता मानते हैं। मोहन ईमानदार सरकारी अधिकारी है और अवकाष प्राप्त करने पर सन्नी के साथ देश सेवा में लग जाता है। शांति देवी, नइकी चाची और ओमी पर बड़े घर के उदात्त वातारवण की स्पष्ट छाप है। सन्ना आरंभ में कुछ निष्क्रिय और विपथ दिखाई पड़ते हैं। किसी सीमा में लांछित और अपेक्षित भी हैं। किंतु सारंगी से शुरु होने वाला उनका जीवन संन्यास की सीढ़ियों से होता हुआ संघर्ष को ऐसा उदात्त भूमि पर पहुॅच जाता है कि वे मूल्यनिष्ठ रचनात्मक कम चेतना के प्रेरक प्रतीक बन जाते हैं। राजन भी 'पॉच ऑगनों वाले घर' में ही पला है। रम्मो के प्रभाव से वह परिवार से विमुख होने के लिए यह विवश होता है किंतु 'पॉच ऑगनों वाला घर' उसे बार–बार स्मरण आता है। उससे जुड़ने की कशिश उसमें निरंतर बनी रहती है। यही कारण था कि उसने छोटे पर दायर किया मुकदमा बिना रम्मो को बताए उठा लिया और अपने हिस्से का कमरा उसे दे दिया। बॉके और रम्मो के विपरीत आचरण एक औपन्यासिक आवश्यकता की प्रर्ति के लिए गढ़े गए हैं किंतु उनकी विपरीतता के भी मनोवैज्ञानिक कारण हैं। कमलाबाई पेशे से तवायफ हैं। कोठा चलाती हैं किंतु उनकी चरित्र निष्ठा, प्रेम, त्याग और मानवीय बोध हमारे मन में उनके प्रति आदर उत्पन्न करता है। अंग्रेज हेडमास्टर स्मिथ प्रषासन के दबाव में राजन को दंडित करते हैं किंतु मानवीय स्तर पर उससे क्षमा मॉगते और राधेलाल की गिरफ्तारी की सूचना देने उनके घर चले जाते हैं। यह आश्चर्यजनक है किंतु मिश्र जी ॲंग्रेजों में भी एन्ड्रूज की संभावना से इंकार नहीं करना चाहते। गोवर्ध्दन मन, वाणी और कर्म से गांधीवादी समाज सेवी हैं। बंटू, बिट्टो और छोटू, पारंपारिक मूल्यों से विच्छिन्न आत्मकेंद्रित मनोवृत्ति वाले, नई पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। किंतु उनके भी अपने तर्क हैं, अपनी मेधा है। उन्होंने 'पॉच ऑगनों वाला घर' नहीं देखा है। वे परिवर्तित वातावरण और भिन्न प्रकार की परवरिश के परिणाम हैं।

भूमंडलीकरण के संदर्भ में 'पॉच ऑगनों वाला घर' गोविंद मिश्र की एक ऐसी सफल रचना है जिसमें सन् 1940 से 1990 तक की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक स्थितियों का संवेदना संपृक्ति के साथ सफल अभिव्यंजन हुआ है। इसमें बहुस्तरीय पतनशीलता के लेखक की चेतना संपृक्ति और सामाजिक संसक्ति भी प्रमाणित हुई है। तीन पीढ़ियों और पचास वर्षों के विकास या ह्रास क्रम को गहन संवेदना और कलात्मक सिध्दि के साथ इतिहास के प्रामाणिक परिप्रेक्ष्य में – प्रस्तुत करना – और बड़ी सफलता से किया है। यह उपन्यास हमें आज की भोगवादी आत्मकेंद्रित मानसिकता की दारुण परिणतियों के प्रति हमें आगाह भी करता है जिसके कारण आज की पीढ़ी अपनी जड़ से कटकर धुरीहीन जीवन की त्रासदी का अभिशाप भोग रही है। इन्हीं कारणों से लगता है कि गोविंद मिश्र श्रेष्ठ और सार्थक सृजन की अभिनव परंपरा के उद्भावक हैं।

## संदर्भ

1) भूमंडलीकरण और मीडिया – कुमुद शर्मा
2) भूमंडलीकरण और साहित्य – प्रभाकर श्रोत्रिय
3) सृजन के आयाम – डॉ. चंद्रकात बांदिवडेकर